16वां

गाजरघास जागरुकता सप्ताह

दिनांक – 16.08.2021 से 22.08.2021

वेबिनार (Webinar)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुरोध एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के निर्देशानुसार संस्थान के निदेशक के मार्गदर्शन में गाजरघास जागरुकता सप्ताह के तहत दिनांक 19.08.2021 को "गाजरघास उन्मूलन" कार्यक्रम का आयोजन वेबिनार द्वारा किया गया जिसमे आमंत्रित वक्ता डा. सुशील कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश की प्रस्तुति से कर्मचारियों, अधिकारियों एवं शोधार्थियों ने लाभ उठाया।

संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने डा. सुशील कुमार का परिचय देते हुए बताया कि गाजरघास भारत की ही नहीं विश्व की समस्या है। प्रत्येक देश अपने स्तर से इसके उन्मूलन के लिए कार्य कर रहे हैं। गाजरघास यद्यपि कृषि क्षेत्र के लिए अभिशाप है लेकिन वानिकी भी इससे काफी प्रभावित रहा है। कृषि एवं वानिकी के उत्पादकता प्रभावित करते हुए प्रत्यक्ष रुप से यह मानव स्वास्थ्य के लिए भी घातक साबित हुआ है।

संस्थान के समूह समन्वयक (अनुसंधान) डा. योगेश्वर मिश्रा ने गाजरघास की उत्पत्ति, पहचानकर्ता तथा इसके नुकसान के विषय में विस्तार से बताया। उन्होने बताया कि इसके उन्मूलन हेतु अनेक शोध किए जा चूके है और किए जा रहे है, लेकिन सर्वोत्तम उन्मूलन तकनीक इसे पुष्पन से पूर्व जड़ सहित उखाड़कर नष्ट करना ही साबित हुआ है। उन्होने बताया कि जैविक उन्मूलन में साल वृक्षों/पौधों पर नकारात्मक परिणाम आते है।

मुख्य वक्ता डा. सुशील कुमार ने "वनों में गाजरघास की समस्या एवं प्रबंधन के उपलब्ध विकल्पों" विषय पर अपने व्याख्यान में गाजरघास उन्मूलन हेतु अपने संस्थान द्वारा किए

गए कार्यों को विस्तार से बताया। उन्होने बताया कि यद्यपि यह कृषि फसलों की उत्पादन क्षमता को प्रभावित करता है लेकिन वानिकी भी इससे काफी प्रभावित होता है। खास कर साल क्षेत्र में इस घास पर आकर्षित होने वाले कीट साल को काफी नुकसान पहुंचाते है। डा. कुमार ने वानिकी क्षेत्र में इसके निदान के विकल्पों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होने बताया की मानवीय, जैविक और रासायनिक तीनों विकल्प काफी सफल रहे हैं। जैविक विकल्प में थोड़ा सावधानी की आवश्यकता है जबकि रासायनिक विकल्प खास क्षेत्र का ध्यान रखना आवश्यक है। उन्होने इसकी कई प्रजातियों को भी बताया। उन्होने बताया कि यह नाइट्रोजन स्थिरिकरण को प्रभावित करता है।

चर्चा की शूरुआत करते हुए डा. योगेश्वर मिश्रा द्वारा उठाए गए सरकार द्वारा नीति संबंधी शंकाओं का उन्होने समर्थन किया एवं आपसी सहयोग एवं इसके दुष्परिणाम पर शोध के परिणाम से सरकार को अवगत कराने की बात कही। श्रीमती रुबी सुसाना कुजूर के इसका उपयोग क्या है का उन्होने जवाब देते हुए बताया कि इससे कम्पोष्ट जैविक खाद तथा कुछ दवाइयां भी बनाई जा सकती है लेकिन फायदा से यदि नुकसान ज्यादा हो तो उसका उन्मूलन आवश्यक है।

कार्यक्रम के आखिर में डा. कुलकर्णी ने गाजरघास को एलर्जी का बड़ा कारण बताया तथा अपने संस्थान को गाजरघास मुक्त रखने की घोषणा की एवं अन्य क्षेत्रों में इस घास को नष्ट करने हेतु जागरुकता फैलाने पर बल दिया।

कार्यक्रम की सफलता में विस्तार प्रभाग के श्री एस.एन. वैद्य, श्री बी.डी.पंडित, श्री सूरज कुमार, सम्पदा प्रभाग के डा.एस.एन.मिश्रा, सूचना तकनीकी प्रभाग के श्री निसार आलम, श्री बसंत कुमार आदि का योगदान सराहनीय रहा।

INSTITUTE OF FOREST PRODUCTIVITY

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

आभासीय मंच द्वारा

Cisco Webex Meetings

दिनांक – 16.08.2021 से 22.08.2021

https://directorifpranchi.my.webex.com/directorifpranchi.my/j.php?MTID=mbcba09a71b72e19d7065c7577ee4475a

गाजरघास जागरुकता सप्ताह

Lecture by : Dr.Sushil Kumar, DWR, Jabalpur

“Parthenium problem in forests and available options for the management”

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून)

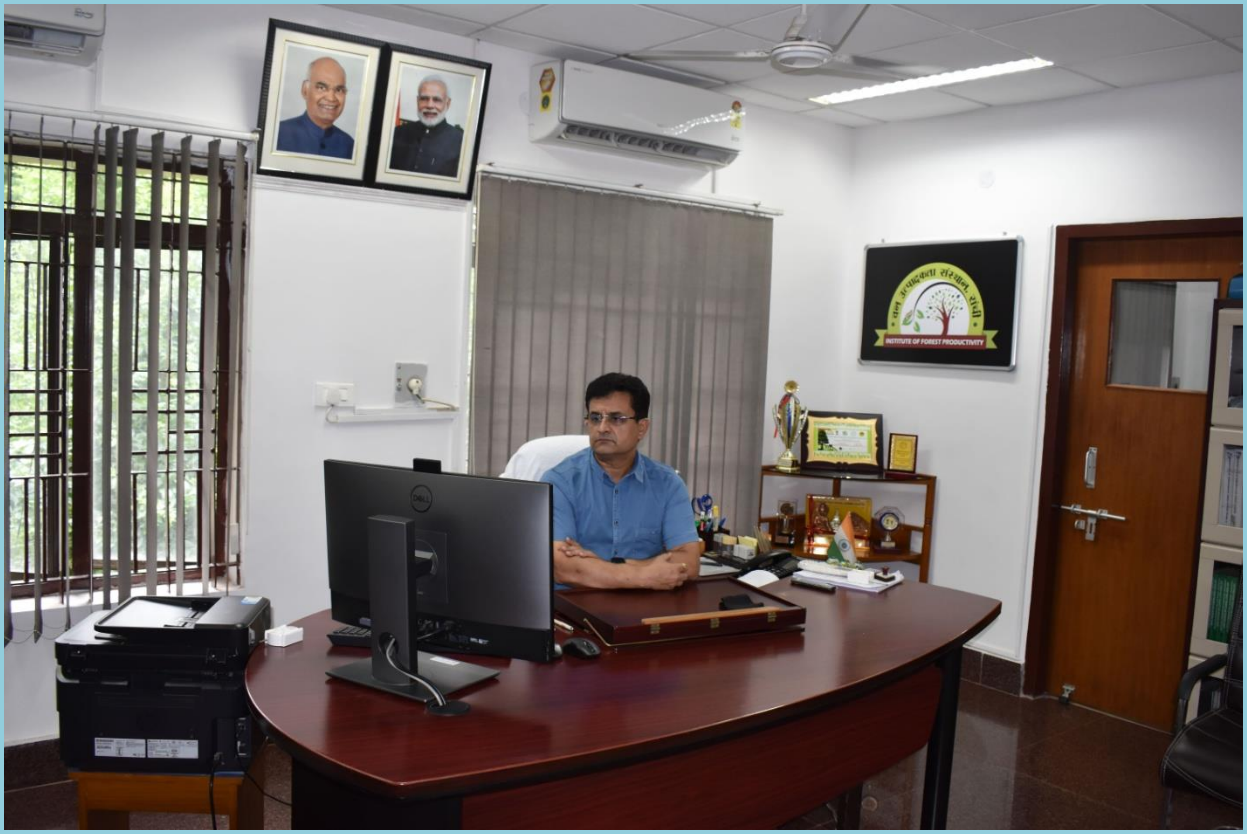

गाजरघास जागरुकता सप्ताह के तहत आयोजित वेबिनार की झलकियां

गाजरघास जागरुकता सप्ताह के तहत आयोजित वेबिनार की झलकियां

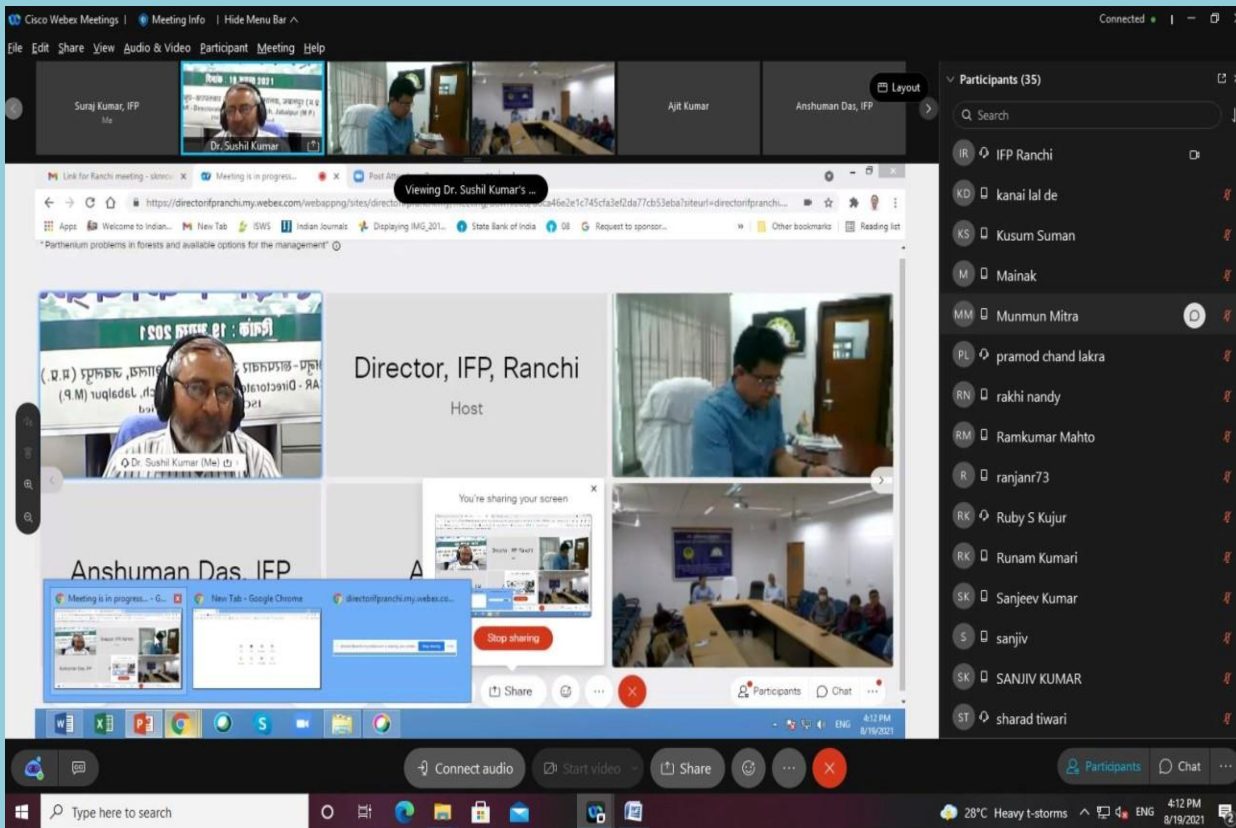

गाजरघास जागरुकता सप्ताह के तहत आयोजित वेबिनार की झलकियां

गाजरघास जागरुकता सप्ताह के तहत आयोजित वेबिनार की झलकियां

गाजरघास जागरुकता सप्ताह के तहत आयोजित वेबिनार की झलकियां

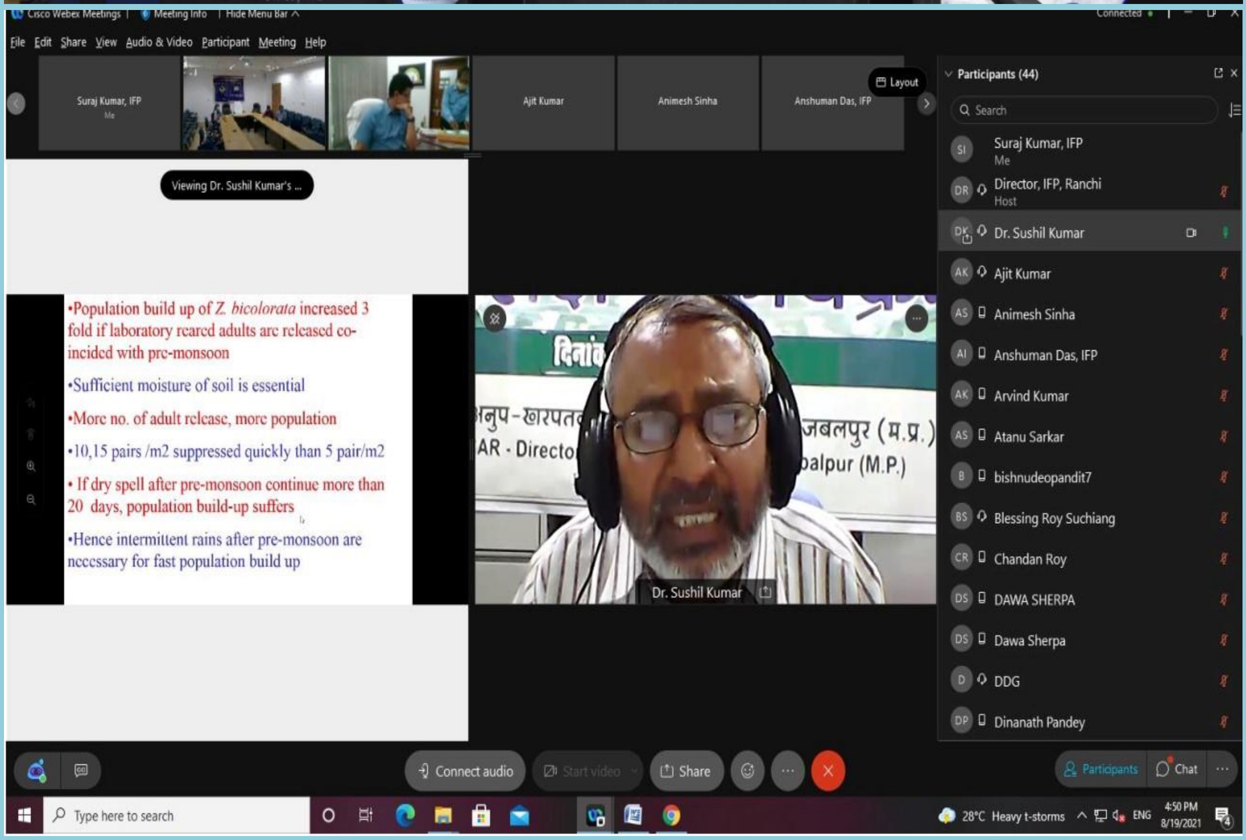

गाजरघास जागरुकता सप्ताह के तहत आयोजित वेबिनार की झलकियां

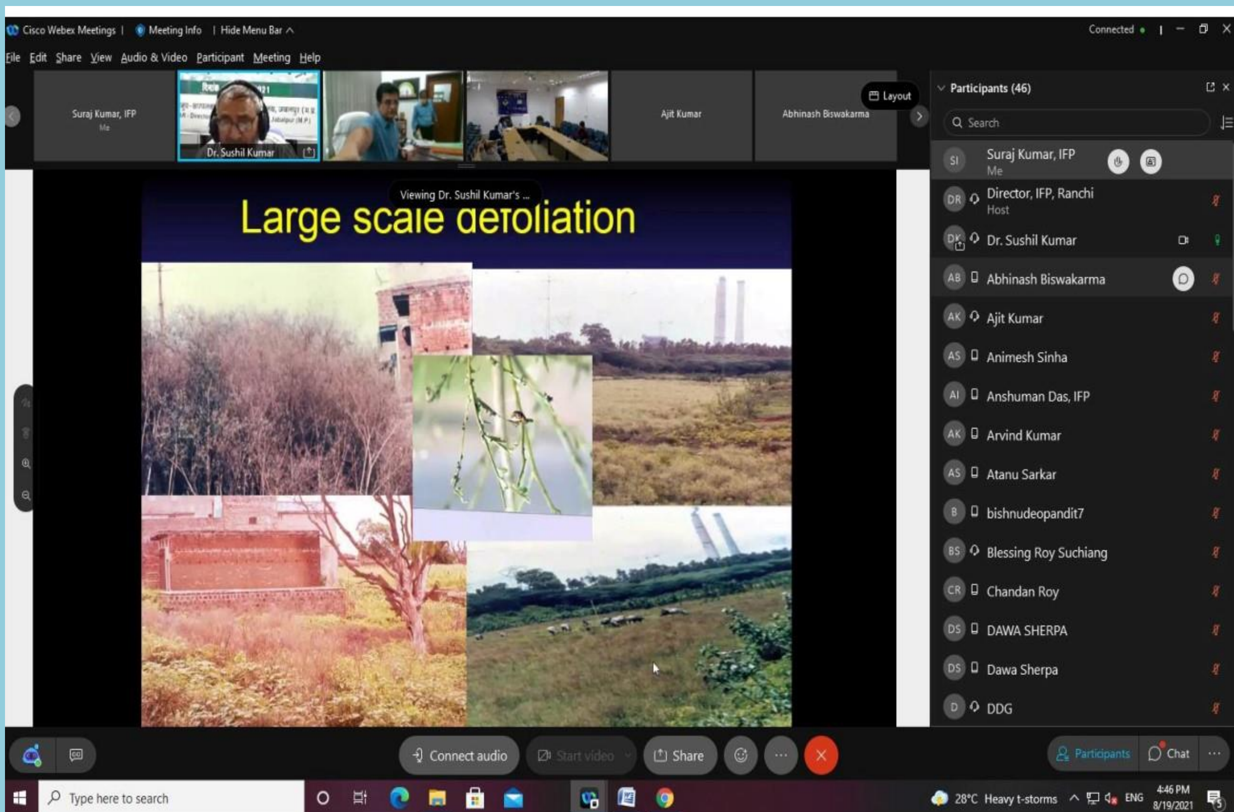

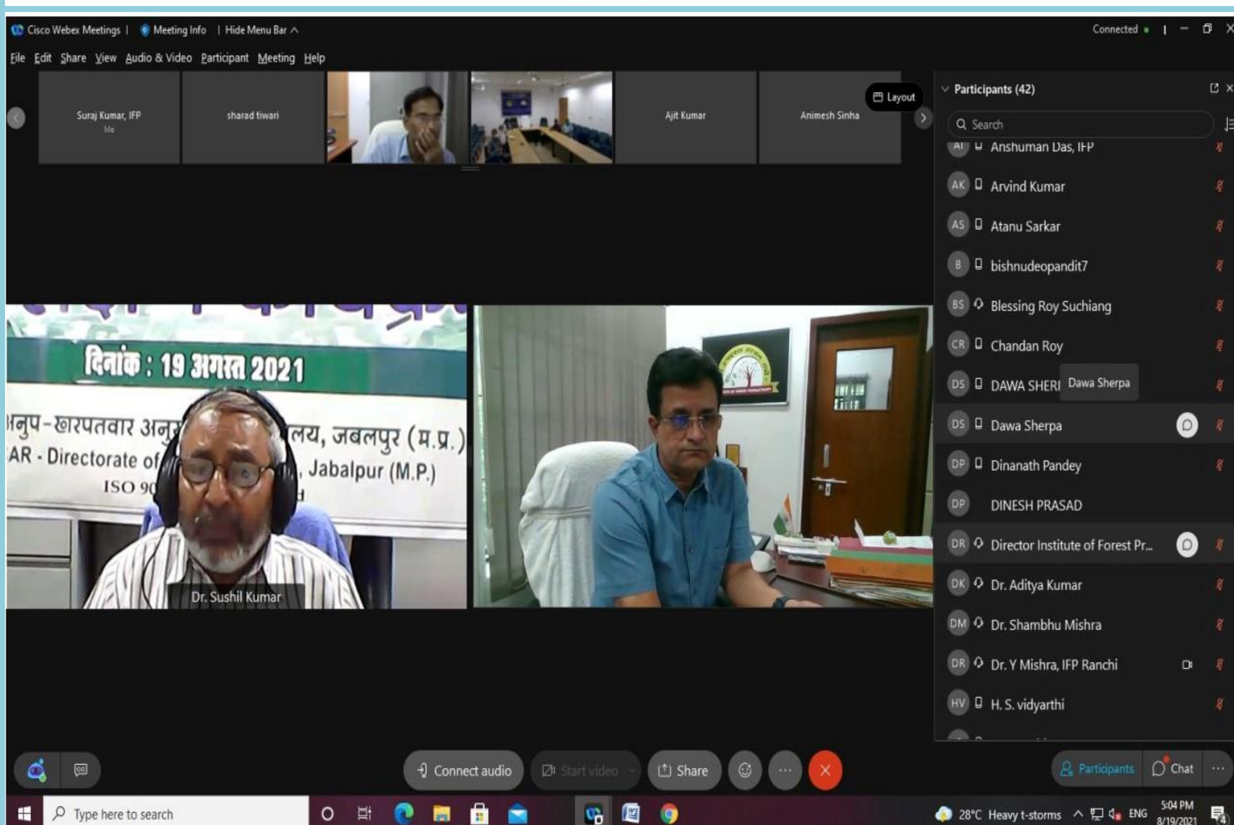

गाजरघास जागरुकता सप्ताह के तहत आयोजित वेबिनार की झलकियां

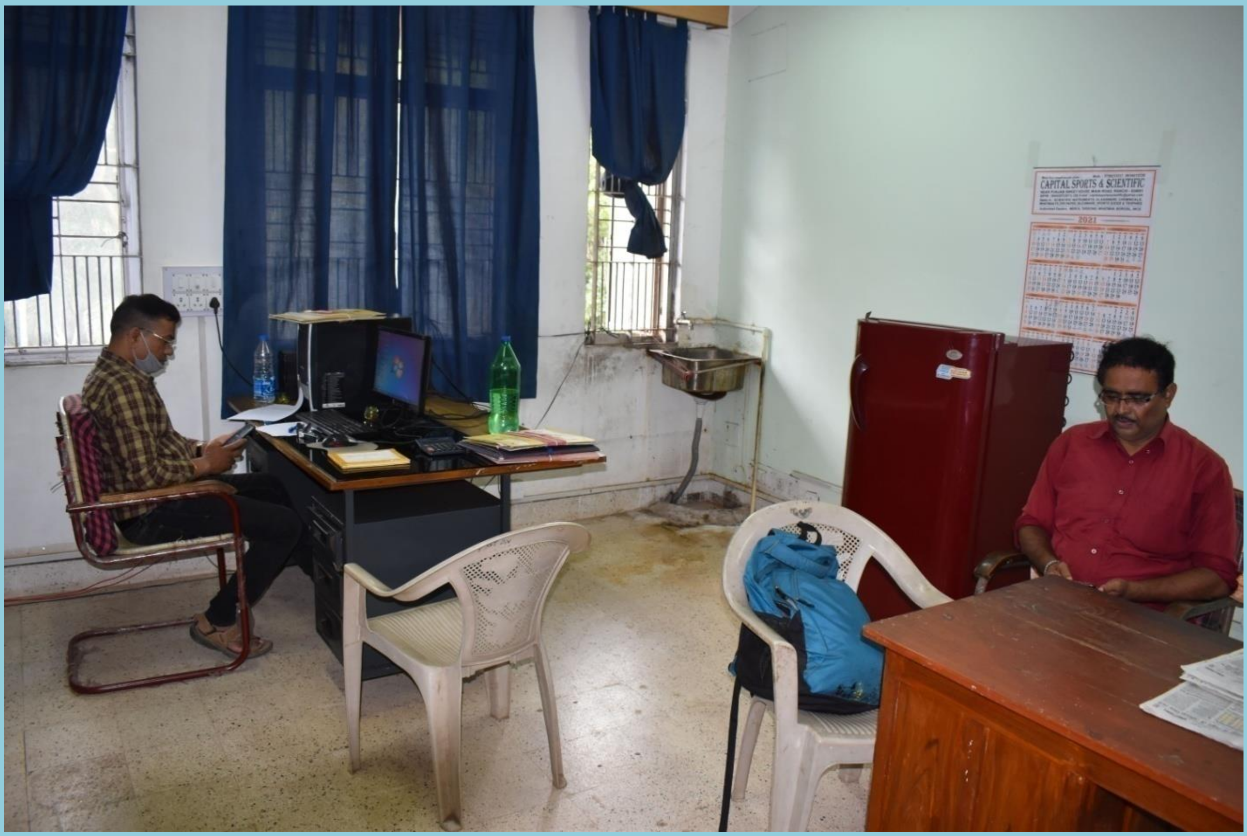

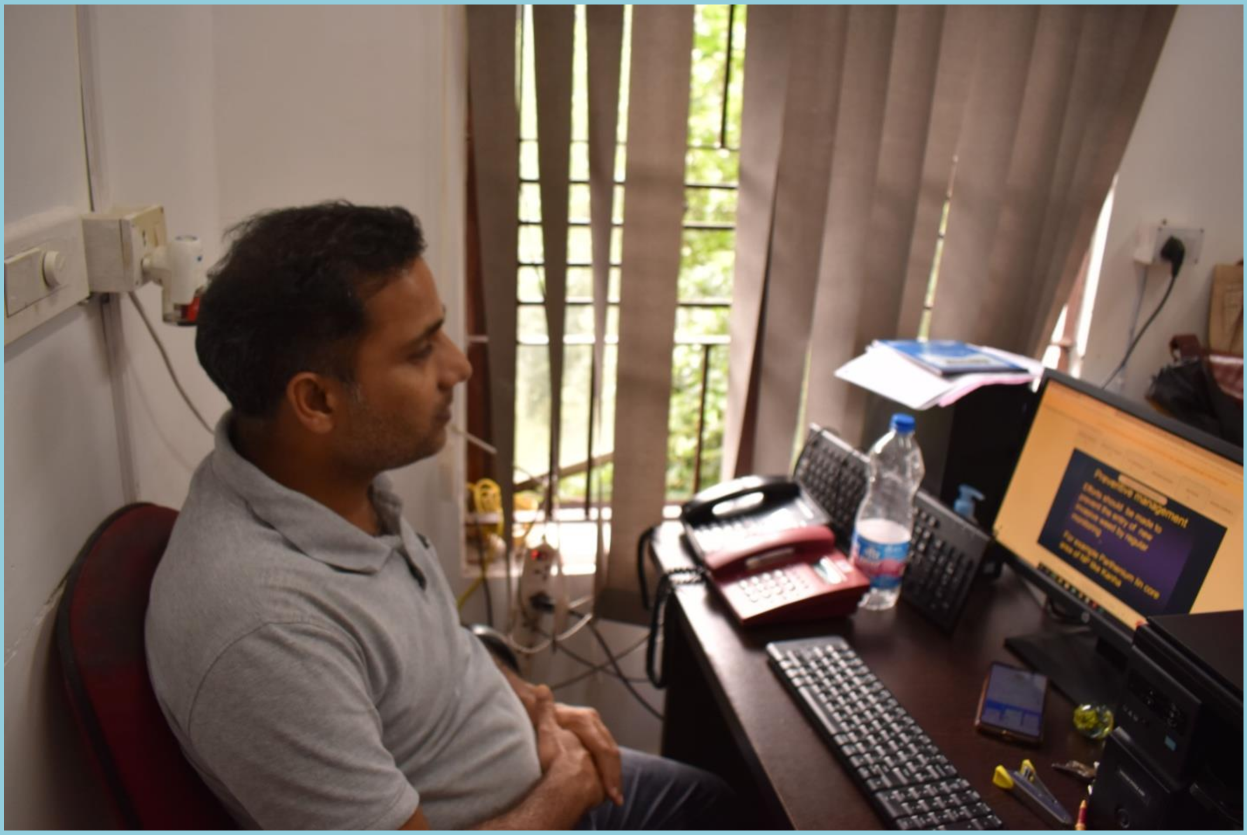

गाजरघास जागरुकता सप्ताह के तहत आयोजित वेबिनार की झलकियां

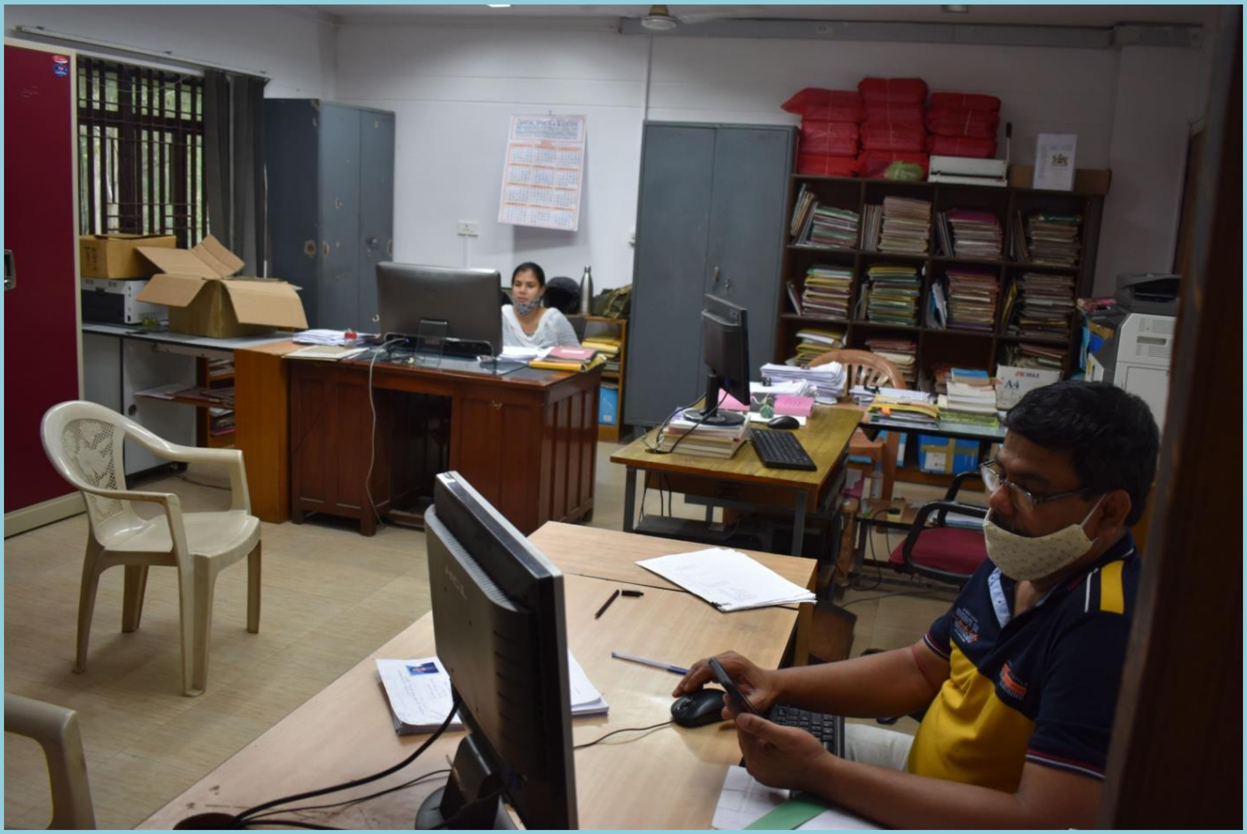

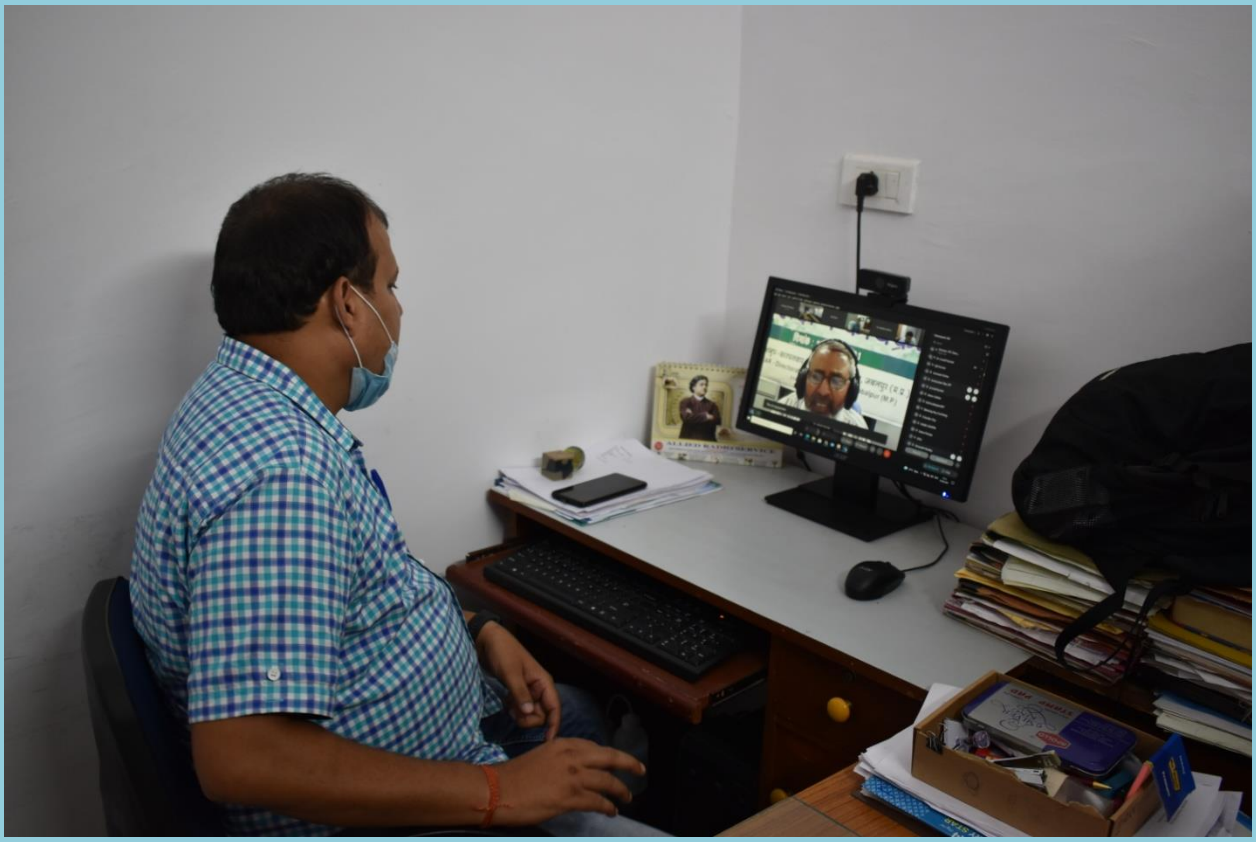

गाजरघास जागरुकता सप्ताह के तहत आयोजित वेबिनार की झलकियां